

913  
 आशुभा मन्त्रकुलि  
 ASHA MANTRIKULI

(37022) 6/9/1913  
 (37023) 11/10/13  
 (37024) 11/10/13

686



आननयनयनमः॥ ॥ अ  
 थगलणयुजाविधि॥ द्वायी  
 पातासंचायवलिभूर्धया  
 उस्तु नमो माकितालला  
 चक॥ नासिय॥ विधीतिय  
 स्वानंकुय॥ चतस्वानजाकि  
 संखजाता॥ उं भूयादि॥ अस्म  
 दादीनांसयनिवातालंसर्व  
 विघ्नयुणमनपूर्वकऊनध  
 नलक्ष्मीसक्तानेय्ययुना  
 नाग्धवृद्धिमतावांकितासि  
 क्षर्थंयंचायवागसहित  
 श्रीगुलणमर्चनकर्तुं  
 सूर्यायभूर्धनमः॥ यू  
 र्धनमः॥ धूर्यनमः॥ यू  
 धाताऊनधिस्यंग॥ उं सि  
 धिनस्तुकिनंरुवृद्धिनस्तु  
 धनागमयूक्तिनस्तुप्री

प्रबुधकिप्रस्तुगृहमम॥  
 सर्वविघ्नयुणमनंसर्वभक्ति  
 कप्रणुत॥ आयुयुगं वकामं  
 चलक्ष्मीसंगतिवर्द्धनं॥ यथा  
 वालयुहातालंकवचंएव  
 तिवागलं॥ गणदेवविघ्नोनी  
 भक्तिर्वगुवागलं॥ कमलु  
 लयुष्यताऊनंनमस्तुनामि॥  
 गुनंनमस्तुना॥ न्यास॥ कःभू  
 मुयंरुद॥ ३॥ कौभूगुण  
 लीनमः॥ ॐ यादि॥ भूर्धया  
 उयुजा॥ कौहृदयायनमः॥ द  
 वतस्वानतय॥ आवाहनादि  
 वन्दनाकृतयूय्यनमः॥ धनू  
 मूडा॥ लंखनदेवस्नानं॥ गंग  
 दासनिताणुष्ठानानायायप्र  
 लमनैयूतकस्याययुकोनां  
 स्नानार्थं तयुडीकतां॥ ॥



चन्दनं ॥ ॐ ॐ देमलयसैरु  
तं चन्दनं हि मणि तलं ॥ वीग  
जा कुरु विद्रुत गृहालमम  
सिद्धय ॥ सिद्धं ॥ ॐ यूल् व  
दुन कुरु स्य लो कुरु नवीन ल  
बलं गृहाल वीग देवण सि  
दुनं वर्ज दायकं ॥ ऊ ऊ का ॥  
ॐ उय वीग मिदी देव मरु क  
ए स्य ला कुरु न गृहाल वीग  
याग स्य दुर्ल प्रापे चयं मम ॥  
पूष्य ॥ मा स्येता ना विधे चैव  
वल् सो गत्य निर्मलः उला  
युगात्म कै वीग गृहाना क हला  
फेय ॥ ॥ अथ न्यास ॥ नासि  
य ॥ ॐ गं स्वाहा ॥ ३ ॥ ध उ ग  
आण नयूजा ॥ ॐ गं आत्मन  
ॐ द मा समं नमः ॥ पूष्य नमः  
कन लम धनं ॥ ॐ गः भू क्राय  
इदं ३ ॥ ॐ गं भूगुष्टं त्वी नमः

ॐ गीं तर्जनी त्वी नमः ॥ ॐ गं मध्य  
मी त्वी नमः ॥ ॐ गं अनामिका त्वी  
नमः ॥ ॐ गं कनिष्ठी त्वी नमः ॥  
ॐ गः कन गल पृष्ठा त्वी नमः ॥ द  
दयादि ॥ ॐ गं हृदयाय नमः  
ॐ गीं निन स स्वाहा ॥ ॐ गं निवा  
यै वो षट् ॥ ॐ गं केव वायुं ॥  
ॐ गं नरे ग याय वै षट् ॥ ॐ गं भू  
क्राय इदं ॥ अथ याग यूजा ॥ ह  
दयादि षष्ठं गन यूजा ॥ ॐ गं  
हृदयाय नमः ॐ गीं निन स  
स्वाहा ॥ ॐ गं निखायै वो षट्  
ॐ गं केव वायुं ॥ ॐ गं नरे  
ग याय वै षट् ॥ ॐ गं भू क्राय  
इदं ॥ अथ याग यय आवाहना  
दिवन्दना कन पूष्य नमः ॥  
धनमूद्रां ॥ ऊ ल याग यूजा ॥  
ॐ वक्र लनमः ॐ विष्णु वनमः  
ॐ रुद्राय नमः ॥ ॐ ऊ ल याग



ॐ

यथावाहनादिवंदनाक्षेप  
यूष्येनमः॥ आत्मनसिंचने  
नमः॥ आत्मनचन्दनेनमः॥  
आत्मनयूष्येनमः॥ विजलि  
नेमं मूषासनायनमः॥ नेमं  
युगासनायनमः॥ नेमं सिंहासना  
यनमः॥ ध्वदगगनस्ववाल॥ नेमं  
गंगलयुगयवलिंगुल २ स्वा  
हा॥ नेमं क्षौद्रयालायवलिंगु  
क्रस्वाहा॥ नेमं इन्द्रगर्भयवलिंगु  
गृक्र २ स्वाहा॥ माहनीसोध  
नं॥ जलीलणगं वायवगस्वा  
नगयदवधियकं गय॥ नेमं व  
ज्रुल्लायहं॥ ध्वमं नणध  
न १०॥ मगगययूजा॥ नेमं स  
र्वमाहिनेनमः॥ यथाजलि ३  
ध्वयधनधूनजातामां माल  
नीपदलयसंवकीर्णथवा॥

नमामहादेवाय॥ जगत्  
नवाउवाच॥ नेमं जयत्यमा  
हिनीदवीनिर्मलमलना  
णिनिज्ञानणकिः प्रहृद्वी  
वृद्धिस्तेनजवृद्धिनी॥ जन  
नीसर्वहगानीसंसाजस्मि  
नव्यवलिता॥ मातावीना  
वतीदवीकागृत्वंकृन्वत्स  
न॥ जयति यनमतत्तनिर्वा  
लसंरुतिगजामयीनीः सु  
ताव्यकृन्वायनाज्ञान  
णकिस्त्वमिच्छाक्रियामंगला॥  
मृज्जगरवाहूजयायूनः सूफं  
नागद्वयकुलुलाकागृपा.  
यजुर्नादणकिस्त्वसंगीय  
स॥ एतन्नायातीनृपाणि  
वाजसनामाचवामाचजो  
डीसनाक्षामिका॥ विन्दु



पा. वधू ता द्ववडा कतिस्त्रे  
 शिकोला. अउमकात्र उंका  
 त्रुंकात्र सीयुअ त तत्वमा  
 यशत ॥ तत्वतूया स्वतूया  
 एगमकात्र वस्त्रोयनी ॥ आ  
 दिगः ख्यात तत्वा हवायो  
 निरूपाव. श्रीकल्ल सभाह  
 नी ॥ नूडमाता तथानन्द  
 किः सैतु आशि मूर्त्यमना  
 धीसनी ॥ एगतरती तिथी  
 ञमिका. लालतगाहना  
 ख्याव. मलीनलोकीनस  
 द्यात्मिका नृगृहीचक्राधि  
 तात्यमहासनसंरागिनी ॥  
 श्रीदणंतामृताविन्दुसंभा  
 हिनी ॥ स्यन्ददहलूताणव  
 सैस्यकयनानन्दनिर्वालीसो  
 ख्यप्रदे ॥ ऐनवाऐनवीद्या  
 नकीजनणक ॥ यनामालि  
 नी नूडमालाधिग. नूडण

किः खगीसिद्धियागण्यनी  
 सिद्धिमाता. विजुणदनाभी  
 तियात्याल्लवीवाग्विपुडाणि  
 वासिद्धिवागीण्यनी ॥ मातृका  
 सित्वनिकाक्रियामैगला. सि  
 द्धिलक्ष्मीविरहतिः सैरतिः सु  
 रतिर्जतिः ञमण्यनी ख्यातिनी  
 नायनी ॥ नकवल्लुकनात्रव  
 ललीमनूया. महाकृष्णयाग  
 प्रिया. त्वंजयैत्यादिगा ॥ नूड  
 संमाहिनी. त्वंनवात्मानन्ददेव  
 स्यवात्संगयानाहता ॥ मनुमा  
 र्जनिर्गमोर्लिरिर्माहिरिर्वि  
 नयानानृगकेः सूरकेण्वसंयू  
 अस ॥ दवीयैवामृतोर्दिव्यया  
 नात्सर्वमूलुकंकालकालिनी  
 ॥ एकजन्मदिजन्मजिजन्मव  
 पुः यक्षुषट्सकजन्माहुवे  
 ञमन्त्रवेत्तंण्वमालैः पुण्ड्रः द  
 र्गुहिरुर्व्यसमद्यमासपिथे ॥  
 पा ५



यागविद्याप्रणालिहिरिर्म  
 लुकं कालकापालिकैः ॥ दि  
 व्यवर्त्तमानं नृत्तमनुनमस्का  
 नृत्तं कानः स्वोहास्वधाका  
 नृत्तं वटवटका नृत्तं  
 कानृत्तं द्वात्रिंशतिरित्ये  
 पचमन्त्रादुपानिहितम  
 हस्तस्ति ॥ अहस्तुणव  
 लीजापिरिः साधकैः पू  
 र्णकैः स्मार्त्तहिरिर्मलदी  
 क्षितेर्गिरिगिरिगीर्ति  
 वन्दमलायके नृत्तकीर्ण  
 मय्यस्य ॥ यागिनीया  
 गतिद्विप्रददवित्वं यन्  
 यज्ञपमलोचनैः स्मृतं  
 ल्लस्तुसंयन्वत ॥ तस्यदि  
 व्याकृतिरुक्लितासकपा  
 गालसैवचनीसिद्धिनया  
 हगावर्त्त ॥ एकितायः

प० दलुकं ॥ उककालंदि  
 कालं गिकालं चतुः पंचयज्ञ  
 फवाशेषुविः संस्मृत्यः  
 सदा मानवः ॥ स्वीयिचोना  
 ग्निष्ठास्तुर्वयवर्त्तगायपि  
 सैवकस ॥ दविपूषानृत्ता  
 गन्महालक्ष्मीयद ॥ हनचो  
 नात्यदो नानुसक पंचवर्त्त  
 घृणघृमाहादायदृष्ट  
 विमूच्यन्ति सैस्मृत्यदवी  
 स्वदीयं मुखं पूर्णं चतान  
 कानं स्तुतदिव्यमालिक्कस  
 फलुलोत्तृष्टगलुस्तुलै ॥  
 ययिवद्वाहृटवर्त्तनेना  
 गयाणे ज्ञावध्यपादं  
 गनेस्तुयित्वं नामसैकीर्त्त  
 नादविमूच्यन्ति घात्रेर्म  
 हाव्याधिरिः ॥ संस्मृत्यपा  
 दानविन्ददयाने महाका  
 लिकास्त्राग्निनृत्तः पुष्ट ॥



लुङ्गमविन्दुवृक्षचन्द्र  
 कं पृष्ठायुधेभ्यो लिमाला  
 लिहस्यद्रकिजलससि  
 पूरल॥ तववीगामिकले  
 नवीरै नवसुषणप्रतागता  
 हं कर्मस्वायगाधं कर्मस्वा  
 यगाधं निवे॥ नवंकुत्वा  
 महादेवीरै नवनमहात्म  
 ना॥ ततालिंगं विनिर्लिङ्ग  
 निर्जिताय नमः पृथगी॥ यद  
 कर्म यनिग्रहं मागहीनं  
 चयद्रवत्॥ कुरुमहसि  
 मद्विकस्यवेतिष्वलंम  
 नः॥ ॐ तिष्ठति विवर्णकिस  
 मगत्वेमालिनीदंलुकः स  
 नायकः॥ ॥ धूनवालिगय॥  
 पंचवालि॥ ॐ गं कं कं कं  
 लायवलिंगं गुरु २ स्वाहा॥ ॐ  
 गं किं कलपूषवद्रुकाथा

यवालिगुरु २ स्वाहा॥ ॐ गं गी  
 गुरुलपूषगलपूषयवलिंगं  
 गुरु २ स्वाहा॥ ॐ गं कं कं सि  
 द्वियोगिनीलावलिंगं गुरु  
 कुरु २ स्वाहा॥ ॐ गं कं कं सिद्धि  
 वामूलुयैवलिंगं गुरु कुरु २  
 स्वाहा॥ आसनयुगा॥ आगं  
 आधिगादिभूषयूषासना  
 यनमः॥ ॐ गं यद्वासनाय  
 नमः॥ ॐ गं मूषासनाय नमः॥  
 ध्यानं॥ ॐ गं गुरुवकुं कदकं  
 चसोवल्लं चचगुरुकुं॥ दलुप  
 र्वकृपावचतागयद्रुपवीग  
 कं॥ नानारुजनलपूषागुनु  
 लादुर्मुक्तिं॥ मूषासनग  
 लुधं कं सिद्धिदं चनमगुरु  
 ॐ गं गी गुरु गुरु गुरु गुरु गुरु  
 दूकौयूकयाधुमि॥ ध्यानयूषो  
 नमः॥ आवाहनादिमूडा॥



ॐ गं गलणं हागकूं  
 हतिष्ठस्वाहा ॥ ॐ गं ग  
 लयतययाईभूर्धस्तानं  
 च ॐ मनेचन्दनेमिहनेवृष्य  
 नमः ॥ ॐ जलितयमून  
 मेकन ॥ ३ ॥ ॐ कीं मुद्रिदा  
 येनमः ॥ ॐ कीं सिद्धिदाये  
 नमः ॥ वलिगृहस्वाहा ॥  
 ॐ गं आमादायनमः ॥ ॐ गं  
 यमादायनमः ॥ ॐ गं विष्णु  
 नाजायनमः ॥ ॐ गं विनाय  
 कायनमः ॥ ॐ गं हनवाय  
 नमः ॥ ॐ गं लवादनायनमः ॥  
 ॐ देवलिगृहस्वाहा ॥ हद  
 यादि ॥ ॐ गं हदयायनमः ॥  
 ॐ गं भिन्नमस्वाहा ॥ ॐ गं भि  
 त्वायेवयद ॥ ॐ गं कववाय  
 द ॥ ॐ गं भेगुगियायवोय  
 द ॥ ॐ गः अस्तुयदद ॥ ॐ

दैवलिङ्गं २ स्वाहा ॥ मूलम ॥  
 ॐ गं गं गं गं गं महागलयत  
 य सण्णिको य सायुधय  
 सवाहनाय यादुको य ऊयामि  
 ॥ वलिङ्गं स्वाहा ॥ हनसिद्धि  
 य ऊ ॥ ॐ ऊं ऊं ऊं हनसि  
 द्वि या मि ऊ ऊ ऊ न्ये वाद  
 काय ऊयामि ॥ वलिङ्गं २  
 स्वाहा ॥ सगुणय ऊ ॥ ॐ अण्ण  
 लोमादिभूद्वि नं जी वीत्यः  
 यादुको य ऊयामि ॥ वलिङ्गं  
 २ स्वाहा ॥ माहनीय ऊ ॥  
 ॐ सर्वमाहि न्ये वादुको य ऊ  
 यामि ॥ ॐ दैवलिङ्गं २ स्वा  
 हा ॥ वलि ॥ ॐ ऊं ऊं या ला  
 य वलिङ्गं २ स्वाहा ॥ ॐ वां  
 वदुकनाथ य वलिङ्गं २  
 स्वाहा ॥ ॐ सिद्धि वा मू ॥ ये  
 वलिङ्गं २ स्वाहा ॥ ॐ हं गु  
 कादिरया वलिङ्गं २ स्वाहा ॥



ॐ पुथा गमदि ल्या वलिं गृह्ण २  
 स्वाहा ॥ ॐ अस्ति गी गमदि ल्या  
 वलिं गृह्ण २ स्वाहा ॥ ॐ वैष्ण  
 ॐ दि ल्या वलिं गृह्ण २ स्वा  
 हा ॥ ॐ सर्वरुग ल्या वलिं गृ  
 ह्ण २ स्वाहा ॥ सम यति ॥ ॐ  
 सर्वपी भय पी भ नि दाना  
 य दान मव च ॥ रुजा य रुज  
 सी दा हा सर्व दि रुग ग सी हि  
 तः ॥ ॐ देय व महा वक्रुणा  
 नाथ व न दाम म ॥ ॐ देव  
 लिं गृह्ण २ स्वाहा ॥ ॐ उका नू  
 कै य किं विरु त्सर्व ह दया  
 य वलिं गृह्ण २ स्वाहा ॥ यथ  
 सा मुक्त दू ल या पि ॐ दं भू  
 लि वलि पि मि गी महा पूजा  
 वलिं गृह्ण २ स्वाहा ॥ ला हा ति  
 य ॥ ॐ पू देव गा पूजा ॥ धर्य

वन स्य लूह वंध ये ना ना गंध  
 समा प्रि त ॥ आ धु नै सर्व देवा  
 नां धू या यै पु नि गृह्ण गी ॥ दि पं ॥  
 स्रु य का ण प्र दं दि ये सर्व गु नि  
 मि त्रा य हां स वा द्या ल्या ग नं आ  
 ति दी या यं पु नि गृह्ण गी ॥ सम  
 य द्या या ॥ भू नं महा न सं दि व्य  
 त सै ष दि सम त्वि त ॥ गृहा ल  
 द व दे व ण ने व्य डी पु नि गृह्ण  
 गी ॥ दू ला दि ॥ य का नं दू ल  
 ता म्बू लं मा द का दि सम त्वि त  
 गृह्ण गी द व दे व ण ठो क या मि  
 ग ला धि र्य ॥ कि ग म लं र व दे व  
 या ग ग ल ग ॥ ॐ द दू ल ता म्बू  
 धू प दि य ने व्य द्या दि सि दि र्म  
 कं ल्य न म् ॥ गा य ॥ ॐ गं वृ क्त  
 पुं भु य वि द्य ह ह नं म्वा य धी म  
 हि ॥ ग न सि दि पु वा द या ग ॥  
 १०८ ॥ मु पुं ॥ श्री ग ल ग म ये  
 न मः ॥ ॐ गं या लो य स्य व मा  
 द का रु वि म लं द नं कृ न ग



धं चंद्रां मदमकृतागवद  
नं व्यालायवीगाहलं॥ यरु  
अस्रनकिंनयेर्मनिगलेनी  
गेः सदावन्दिनीविद्युर्णसग  
नैनमामिनित्रसाकामार्थसि  
द्विप्रदं॥ ॐ पूदवगास्तुति॥  
अस्मदादिनांसयत्रिवागालं  
सर्वविद्यनिवात्रनपूर्वकजन  
धनलक्ष्मीसंगानेकण्यार्थ  
अर्थणीगलेणचनविधि  
तत्सर्वविधिपनिष्कर्मस्तु॥  
स्यायदगसाधनवापिपू  
जायाय॥ वायिलेखनसि  
लेवंगस्वानगयथास॥  
पूजा॥ ॐ कालिकालिवज्र  
पुत्रीगाहदलुयनमः॥  
ॐ कीउग्रवलुयेनमः॥ ३॥  
पणुपूजा॥ लेखनमेतल  
दयके॥ पणुलेखनहाया  
य॥ ॐ अस्मायद्रुद्र॥ ॥

पूजायाय॥ ॐ कौं पणुव  
ॐ दमासनंनमः पूष्यन  
मः॥ धवायर्थ॥ पादाव  
स्नानं चन्दनपूष्यधूपदि  
पनेवद्यी॥ पणुगमयेगी॥  
ॐ पणुपाणयविद्यहः वि  
पकर्मयधीमहितान्ता  
माकुपचादयाग॥ ॥ संक  
ल्यॐ अशुष्पगवागाहस्या  
दि॥ कस्मदादीनांसयत्रि  
वागालं सर्वविद्ययणम  
नपूर्वकजनधनलक्ष्मी  
संगानेकण्यार्थयुंरुद्रिम  
नोवांकिगसिद्धिर्थणीग  
लेणयॐ दंकागंवाद्रिद्र  
वर्गवलिलेखनगुर्यमहंघा  
तयिष्य॥ दक्षिणाकाय॥  
प्राथना॥ ॐ पणुगृद्धीगु  
दवैणयद्रुयाउषसावि  
तअस्यापिस्वर्जसंप्राप्त  
ॐ पणुनलेषयकतिगम



लुससमयकायमगविया॥  
 वृकनकाय॥ नव्यलयाय॥  
 दवजापेमुजयायमहमा  
 यावान्ययथाणकिस्तुति॥  
 ॐ नमामहाहेनवाय॥ न  
 दुउवाच॥ नमानमुगमहा  
 मायसूक्ष्मदहपनायन॥  
 उकाकिनीविणुद्रात्माना  
 दाखविन्दुमालिनी॥ अद  
 हावसमस्यन्तः अचनविण्ण  
 धानिली॥ महाशूलुलिनी  
 नियहंसमध्यववस्तिता॥  
 सोमसूर्याग्निमध्यस्कवा  
 मव्यापिपनायन॥ ॐ कात्र  
 विग्रहावस्ते हकात्रादुर्दु  
 पिनी॥ वालाग्रणतधसूक्ष्म  
 अतन्तवाक्यययय॥ हका  
 नादुर्कलान्तस्ययद्वकिजस्ते  
 माणिन॥ सकलाख्यमहामा  
 यवनदलाकपूजिन॥ ॐ कै

कनारिमध्यस्क मर्मनने  
 करदिनी॥ अष्टविंशत्क  
 लाधानरदिनीवृक्षयधरा  
 ॥ विष्णुलगातिरादवीगुं  
 गकुटिलाकग॥ अक्षविष्णु  
 ष्वग्रुदण्वंणीष्वग्रवृषादा  
 शिवः॥ नृगयैवमहापुताः  
 यादमूलव्यवस्तिताः॥ उला  
 क्कननीदवीनमस्तुकि  
 नगुली॥ ॐ हारिगलमध्य  
 स्कमूलालतेनुयिली॥ वि  
 न्दुमध्यगगादवीकुगिलचा  
 र्दवन्दिक॥ उषानकनिका  
 रास. द्वादण्मकावलंकिनि॥  
 उमाहुँहृङ्गनलोनीद्वादण्म  
 दिव्यवर्चस॥ णूत्यणूत्याकना  
 वस्क. हंसारथपानधामिनी॥  
 लैवाक्षपेनमादवीदक्षिणा  
 रुगगमिनी॥ नासायगुस  
 मूलीलमिध्यसूगुषवाहिनी॥



सू. १५३

|              |     |               |
|--------------|-----|---------------|
| आ.स.स.स.स.स. | 913 | ASMA ARCHIVES |
|--------------|-----|---------------|

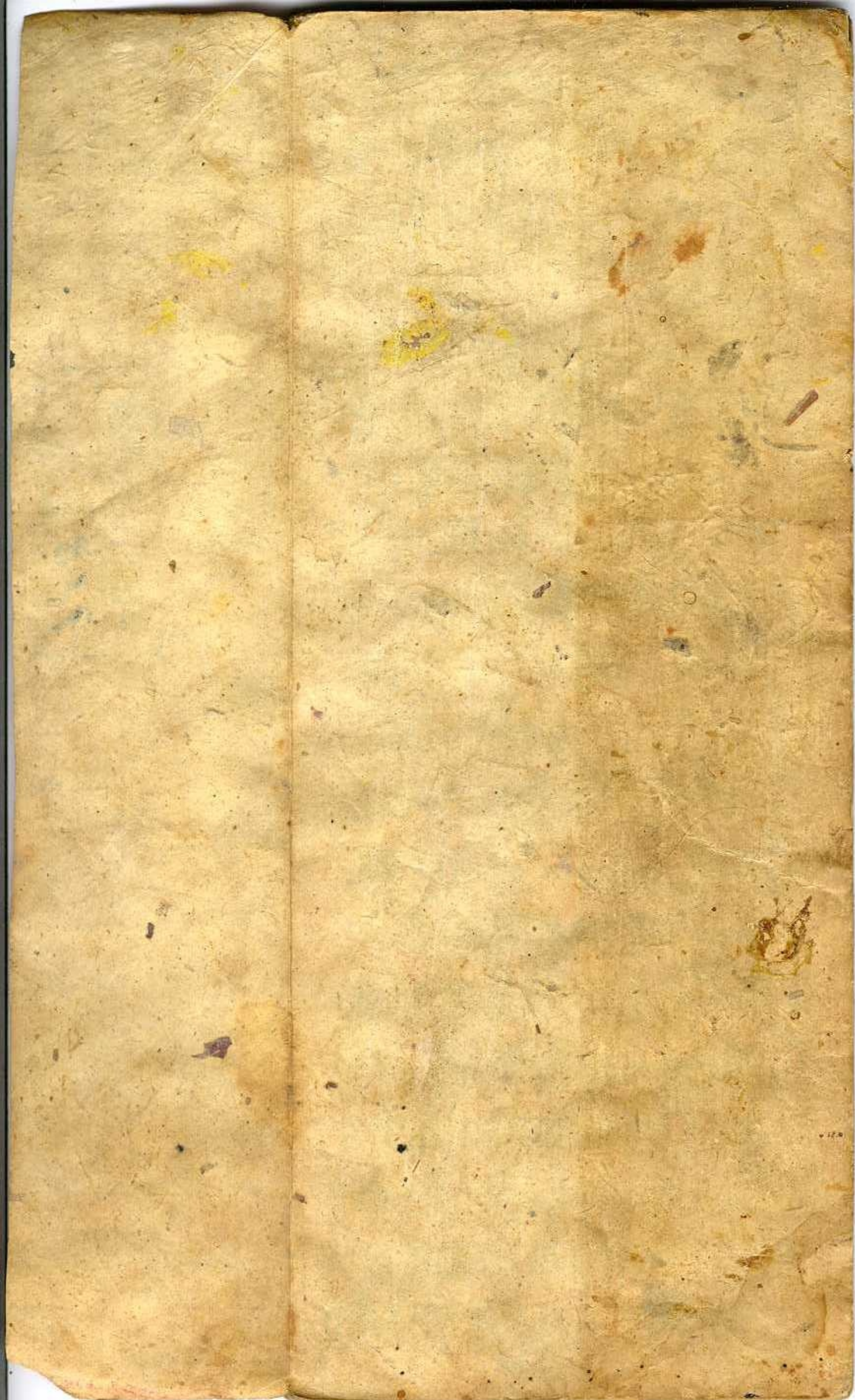
१०

१०

गनेका

१०११११११







रुद्रोऽथ पुनमानन्दः तातुम्  
 द्विव्यवस्तिगः ॥ नादघलि  
 कसैयुष्टगुल्लभूकसम  
 चित् ॥ स्तूतस्तुश्रुतसैकु  
 दुःधम्मोधम्मयूटद्वयका  
 र्यकात्रलक कृतविष्णुन्य  
 नादविग्रहः ॥ यनायत्रपद  
 पुष्टवैतत्यण्मण्यतध्रुवः ॥  
 सर्ववर्द्धधनीदेवीगुह्यतत्त  
 निविष्णुतः ॥ णकिमूलमहा  
 यूरुहः विन्दुवीजसमन्विता ॥ भू  
 णनीत्रमहाकायसैसात्रालं  
 वतात्रिली ॥ ऊयाचविऊया  
 चैवऊयनिकायनाजिता ॥  
 पुष्टवृवीजसमध्वस्तनमस्त  
 वायमाचनी ॥ वैधभाकक  
 तदवीषाउण्मन्यवस्ति  
 तः ॥ रुदिनीणकिमूत्रनम  
 हयूरुहसमन्विता ॥ पुमलीणा

मलीगोत्रीमायायुक्तप्र  
 वाहिनी ॥ पञ्चकन्दरेनवी  
 दवीसकात्मनमकलेग  
 वी ॥ यक्षगणदलत्रेयस्त  
 तयात्रुदाः युकीर्तिता ॥ भू  
 मृताख्यत्रुचेलुनमः का  
 यालिनीजिव ॥ त्रुकिनी  
 महामायनमस्तुहानले  
 तवी ॥ दंष्ट्राकतविद्युक्ति  
 कृतात्रकाक्षीरयानक ॥  
 तमामिदवदवणिभूद्या  
 तघानत्रुयिली ॥ क्षाला  
 मुखिवेगवतीउमादेवी  
 नमोस्तु ॥ आगिनीचणि  
 आदेवीगोत्रीलक्ष्मीसग  
 स्वगि ॥ हंसस्वनादुगदेवी  
 गममुखिणकिमालिनी ॥  
 कोष्ठकिणुरगमदेवीदुर्गा  
 कायोयनीजिवा ॥ निर्वीकि  
 तासमाकाचनकाचका



कृतायना॥ वाङ्मीमाहं  
 श्रीचैवकोमानीवेष्टवीत  
 थ॥ वागाहीचैवमाहं  
 वामुल्लुखंरयानता॥ या  
 गणीत्वेहिदेवणीकला  
 घृकविरविता॥ नुंद्दीवे  
 वगुआगुय्यायाम्पीनेमृ  
 ल्पवागुली॥ वायव्यावेव  
 कोवनी॥ नमस्तसमूहाह  
 ॥ प्रयागवगुलाकोला॥ अ  
 दहासाऊयक्तिका॥ वक्रि  
 कामुकएवेवकाट्टगुवावृ  
 म॥ गथाकालीउमादेवी  
 देवदूतीनमाम्मुग॥ एव  
 कालीमहादेवीवर्ममूल  
 रयापह॥ महाकृष्णमहा  
 णाकेनमस्तुजकिन्नूपिलो  
 ॥ हर्षुवःसगिस्वाहानेदया  
 त्वेहिकृन्वचन॥ सुनार्थि  
 देवी ८

नामहामाय॥ नुगदिकामि  
 वदिगुं॥ यत्स्विदंय०  
 सुर्गजिसंध्येवमानवः  
 प्राप्तातिविकिताकामान  
 सुल्लंखवतीवल्लरः॥ प्रो  
 प्रातिपन्नमस्तुननिर्वीन  
 पन्नमपदं॥ निगिणिवण  
 किस्मन्ननगत्वेमहामाहा  
 स्तुर्गसमाय॥ यथाणकि  
 स्तुतिः॥ अजगैधपूष्यधूय  
 दियपूजाविधानंनत्सर्व  
 विधिपत्रियूर्त्तमस्तु॥  
 देवदत्तिनाकाय॥ देव  
 मद्भाणिदेवाद॥ नुंनस्तुवि  
 घ्ननाजायएकविघ्नवि  
 नाणिन॥ विघ्नाध्यक्षा  
 यएव्यायनिहंउविष्ण  
 वदृष॥ सगुहमाहनी  
 देवयागकाय॥ थउग



अर्चयाम्यालखनअरि  
षककाय॥ चन्दनसिन्दु  
नसगलमाहनीगियस्वा  
नकाय॥ आसलिकाय॥  
ॐ गः अस्तु यद्दृ३॥ ॐ गं  
अगुष्टाणीनमः॥ ॐ गीत  
ऊनीलीनमः॥ ॐ गूं मधु  
माणीनमः॥ ॐ गे अनामि  
काणीनमः॥ ॐ गे कनि  
ष्टाणीनमः॥ ॐ गः कनक  
नयुष्टानमः॥ हृदयादि  
॥ ॐ गं हृदयायनमः॥ ॐ  
गीतिनसस्वाहा॥ ॐ गूं मि  
खायेवोषट्॥ ॐ गे कव  
चायद्दृ॥ ॐ गे निरुजिया  
यवोषट्॥ ॐ गः अस्तु य  
द्दृ॥ अर्चयाम्यालखनव  
लिसगयसंहानमूधान

वलित्वय॥ ॐ उक्ति वृ  
गलणयद्दृ दृ स्वा  
हा॥ ॥ सूर्यसादी  
अस्मत्पुत्रीगलणय  
जामैयूर्ध्वार्थं हनक  
र्मलः सादिलणीसू  
र्ययअर्चनमः॥ ना  
सिया॥ चंगलानसक  
लयागं वियसमयपा  
नन॥ ॐ तिष्ठ गलि  
णपूजाविधिः समादी॥  
सैवगृह्णतु अधिकरा  
दुजगुदिदनाऊरुनाय  
लसूयाऊसिनन्दलाल  
णीगलणप्रितिनणीगरी  
णपूजाविधिआहानस  
कस्यापूजायायगद्दृ  
— — — — — ॐ



श्रीगणेशायनमः॥ ॐ अस्य श्रीवगलामुखिवस्तोत्रमंत्रस्य श्रीभगवाननारदप्रविश्री  
 वगलामुखो देवताबृहस्पती छंदः मम संनिहितानां दृष्टानां दूरस्थानां विरोधिनां यदमु  
 खजिह्वां बुद्धिस्तं भक्तार्थं मम वारणी सिद्धार्थं च विरोधिनां विनाशाय श्रीवगलामुखो  
 त्पार्थस्तोत्रमंत्रजये विनियोगः॥ ॥ अथ न्यासः॥ ॐ ह्रीं ह्रीं अगुह्यभ्यानमः॥ ॐ  
 ह्रीं ह्रीं नर्जनीभ्यानमः॥ ह्रीं ह्रीं मध्यमाभ्यानमः॥ ॐ ह्रीं ह्रीं अनुमिकाभ्यानमः॥ ॐ ह्रीं ह्रीं  
 कनिष्ठिकाभ्यानमः॥ ॐ ह्रीं ह्रीं करनलपृष्ठाभ्यानमः॥ इति करन्यासः॥ ॥ ॐ ह्रीं ह्रीं  
 हृदयाय नमः॥ ॐ ह्रीं ह्रीं शिरसे स्वाहा॥ ॐ ह्रीं ह्रीं शिखाय वषट्॥ ॐ ह्रीं ह्रीं कवचाय

ह्रीं॥ ॐ ह्रीं ह्रीं नेत्रत्रयाय वौषट्॥ ॐ ह्रीं ह्रीं अस्त्राय फट्॥ इति षडंगन्यासः॥ ॥ ततो  
 ध्यानम्॥ ॥ ॐ पीतवस्त्रां सुनेत्रां च दिभुजां दाहकोज्वलां॥ शिलापर्वतहस्तां च  
 स्मरेत्तां वगलामुखीम्॥ ॐ ह्रीं गंगैर्हरेर्द्वागणपतेयवरदस्मर्वजनहृदये स्तं  
 भयस्वहा॥ ॥ ततो मुलः॥ ॥ ॐ ह्रीं ह्रीं वगलामुखी सर्वदुष्टनां वाचं मुखं  
 पदं स्वं भयजिह्वां कालय बुद्धिं विनाशाय ह्रीं ह्रीं ॐ स्वाहा॥ ॥ ततो स्तोत्रः॥ ॥  
 श्रीगणेशाय नमः॥ ॥ ॐ पीतवस्त्रां सुनेत्रां च दिभुजां दाहकोज्वलां॥ शिलाप  
 र्वतहस्तां च स्मरेत्तां वगलामुखीम्॥ ॥ १॥ मध्ये सुधापि मणिमण्डपरत्नं वेद्यां सिंहास



नोपरिगतां परिपीतवराणां ॥ पीतां वराभरणमात्मविभुवितां गीदेवी नमामो धृतमु  
 द्ररं वैरिजिह्वा ॥ २ ॥ जिह्वाग्रमादाय करेण देवी वामेण शस्त्रमरिषो डयेति म् ॥  
 गदाभिघातेन तु दक्षिणेन पीतां वराणां भुजानमामि ॥ ३ ॥ त्रिशूलधारिणो मं  
 वां सर्वसोभाग्यदायिनम् ॥ सर्वभृगारवेणाद्यां देवी ध्यात्वा प्रपूजयेत् ॥ ४ ॥ चल  
 त्कनककुंडलो हस्तित्वाङ्गं दृश्य लोलासत्कनकचं पकड्यति विराजो चंद्रा  
 तनाम् ॥ गदाहतविषयेकांकलितलोलाजिह्वां च लोस्मरामिर्नेगता मुरुवो विमु  
 खसन्मुखसंभोनीम् ॥ ५ ॥ पीयूषोदधिमध्यचारुविलसदुज्ज्वले मंडपे तत्सि

हासनमौलिपादीतरीपुप्रेतासता ध्यासि नो म् ॥ अर्घनी भो करणीडितारिरस्य नो  
 द्वा म्यद्रदा विभ्रमां यस्त्वां पश्यति यांति तस्य विलयं सद्यो पीत्यर्वा पद ॥ ६ ॥  
 देवी त्वच्चरणं वुजे वितनुते यस्मीं तपुष्यां जलीं मुद्रां वामकरे निधाय च पुनर्मंत्रोर्म  
 नो जाधरम् ॥ पीतध्यानपरोपकुंभकवशाद्वा जस्मरेत्वा भीवं तस्या मित्रमुखस्य वा  
 गृहदयगस्तंभो भवेत्तत्तत्प्रणाम ॥ ७ ॥ मंत्रस्थानदले विप्रधादलेन स्त्रोत्रं यवित्रं च ते  
 यंत्रं वादिनी संत्रीणां त्रिजगतां यंत्रं पवित्रं च ते ॥ मातश्चीव गलेति नाम ललितं यस्त  
 यं ते ते मुखे तन्नाम ग्रहणेन संसदि मुखस्त्रंभो भवेद्वादिनाम् ॥ ८ ॥ वादिमृकति रंज



तिष्ठति पतिर्वैद्यानर सीतती क्रोधिशांतति दुर्जनः सुजननिधिप्रानुगंखंजती ॥ गर्वो  
 रवर्वतिसर्वविच्चजडुतित्वद्यं विनायं श्रीतः श्रीनिन्देवजला मुखिप्रतिदिनं कल्पा  
 रिणमुभ्यंनम ॥ ८ ॥ दुष्टस्तंभनमुग्रविघ्नशमनं दारिद्र्यविघ्नं सनं भृत्संगमनंचय  
 मृगदृशश्चेतशमाकर्षणम् ॥ सोभाज्यैकनिकेतनं मम दृशोः कारुण्यप्रणेभरणं मृ  
 त्योमोरणमाविरक्तपुरतो मातस्त्वदिदं वपु ॥ १० ॥ त्वं विद्या परमात्रिलोकजननिवि  
 द्योद्यसंधेदिनियोषाकर्षणकारिणो जनमनदं धैकं शंखेदिनि ॥ दुष्टेन च्छठनकारि  
 र्गो जनमनसं मोहसंधायिनि जिहंकीलनं वै भवाविजयते बुं ह्यास्त्रविद्यापरा ॥

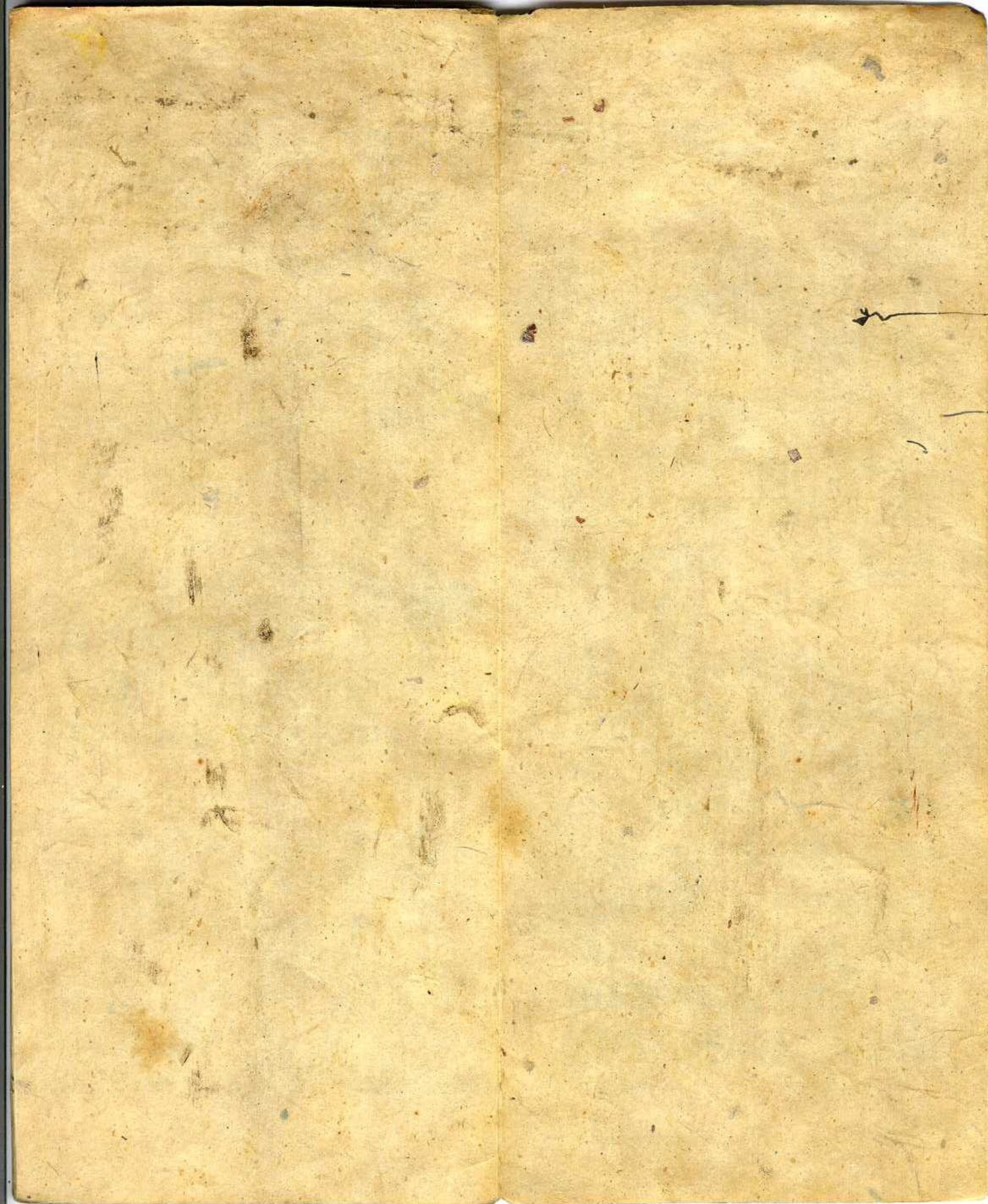
धि

॥ ११ ॥ मातस्तंभयमद्विपथावदनं जिह्वाचलं कीलय वा स्त्रीमदुयमुदुया सुखरागं व  
 द्दुर्गतिस्तंभय ॥ चात्र नृवर्ययचूर्णया सुगदया गौरीं गोपीतौ वरे विद्यो धं वगलेह  
 रप्रतिदिनं कारुण्यपूर्णं धारो ॥ १२ ॥ मातर्भैरवी भद्रकालो विजये वाराहि विष्वा  
 अये श्रीनिन्दे शमये महेशिवगले कामेशि वामे रमे ॥ मातर्गोत्री पुरे परात्परतरे  
 भूर्गोपवर्ग पुंद दशो हंशरणागतं करुणया विन्दे श्वरि त्राहि माम् ॥ १३ ॥ सांकपे  
 चोरसंधे प्रहरणशमये वंधने वारिसंधे वंधो वादे विवादे प्रकुपित नृपतौ दिव्यका  
 ले निशायाम् ॥ वाचे स्त्वस्तंभने वारिषु वंधशमये निर्विरवत्वे रणे वा गच्छति हं त्रिका

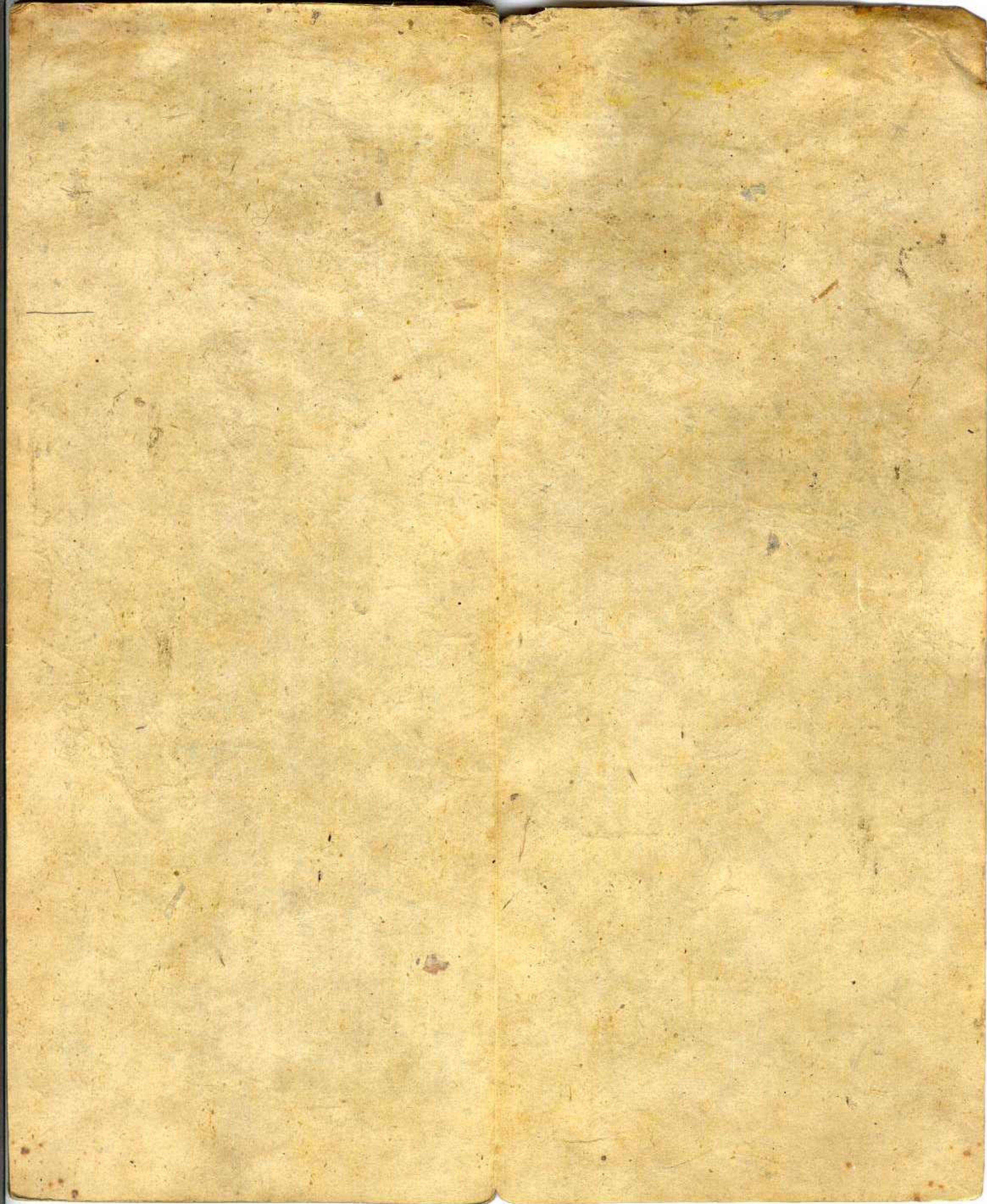


लंस्तवपठनमिदंकार्येसिद्धिप्रदं च ॥ १४ ॥ मातर्हस्तुनरसदास्तवमिदं देव्याः  
पठेत्सादरं धृत्वां प्रोत्रमिदं तथैव शर्मयेवाहोकरे वागले ॥ राजानो वरयोषि  
तोपि करुणसर्पमृगेडासलाः स्तंभं याति निधागते रिपुगता लब्धो र्यथासि  
ध्यति ॥ १५ ॥ अमुदिनमभिरामैस्साधको यस्त्रीकाले पठति श्रीभुवनेशः प्रज्ज  
ते देववर्गे ॥ भवति सकलकृत्यं तस्मद्दृष्टेवलोकैर्भवति परमसिद्धौ लोका  
तस्मथैव ॥ १६ ॥ इति श्रीनारदविरचितं पितृवरास्तोत्रं समाप्तम् ॥ कुं ॥











संम १११२ मिला  
द्व ॥